"कवि परिचिति"

नाम

राम लोचन ठाकुर।

अन्य नाम : अग्रदूत, कुमारेश काश्यप ॥

•

स्थायी पता

ज्योतिरीश्वर चौक,

ग्रा० एवं पत्रालय : पाली मोहन (बाबू पाली),

खजौ ।/मधुबनी,

मिथिला ॥

•

वर्तमान पता

३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,

कलकत्ता-७०० ०३३ ॥

•

प्रकाशन

इतिहासहंता (कविता संग्रह, १९७७)

बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य, १९८१)

प्रतिध्वनि (विदेशी कविता, १९८२) ॥

•

सम्पादन

अग्निपत्र (मैथिली युवा लेखन संकलन, मासिक)

रंगमंच (नाट्य विषयक पत्र)

सुल्फा (मिनि कविता-पत्र)

प्रतिध्वनि

प्र ति ध्व नि

रामलोचन ठाकुर

प्रतिध्वनि

(विदेशी कविता)

मैथिली

राम लोचन ठाकुर

*

अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता

प्रतिध्वनि

विदेशी कविताक मैथिली रूपान्तर

पहिल खेप—मार्च १९८२

दाम—चारि टाका

प्रकाशक :

अरुणोदय प्रकाशन,

३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,

कलकत्ता-७०००३३

मुद्रक :

पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स,

३२-बी, वृन्दावन बैशाख स्ट्रीट,

कलकत्ता-५

PRATIDHWANI (POEMS)

Maithili

by Ram Lochan Thakur

निज भू भाषा हित मरय, मरय ने अमर बनैत अछि ।

तकरे गाथा विश्व ई, गाओत सदा गबैत अछि ।

समर्पण

९ दिसम्बर १९५० क

मैथिली आन्दोलन कें

तथा

मिथिला विभूति

महर्षि भोला लाल दास

ओ

वीरकवि

राघवाचार्य कें

समस्त

श्रद्धा आ सिनेहक संग

—राम लोचन ठाकुर

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

—ऋगॣवेद् १/८९/१

अक्षेत्रवित् क्षेत्रविदं ह्यप्राट्
स प्रैति क्षेत्र विदानु शिष्टः।
एतद्वै भद्र मनशासन स्यात
स्ति बिन्दत्त्यञ्जसीनाम्॥

—ऋगॣवेद् १०/३२/७

वालचन्द विज्जावइ भाषा
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा
ओ परमेसर हर शिर सोहइ
ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ
देसिल बयना सबजन मिट्ठा
तेँ तइसन जम्पओ अवहट्ठा

—विद्यापति

संविधानक पन्ना मे
सरकारी फाइल मे
नेनाक पोथी मे
हमही लड़ैत छी
हमही मैनहैट्टन मे
हमही बेलफास्ट मे
हमही लिवरपूल मे, लंदन मे
ईरान-अफगानिस्तान मे
हमही लड़ैत छी।

— जीवकान्त

संविधान बिनु मैथिलीक आ
मानचित्र बिनु मिथिला धाम
डाहि-जारि सुड्डाह करब हम
विद्रोही मिथिलाक जुआन।

—रामलोचन ठाकुर

कविता-क्रम

आजुक कविता

एक युग छलैक जखन कविता राजदरबार मे नचैत बारांगनाक घुंघरूक संग आ मंदिर मे नचेत देवदासी तथा बजैत झालि-मिरदंगक संग सूर-ताल मिलबैत छल। कविताक कथ्य नर्तकीक थिरकनाइ-लचकनाइ तथा देवी देवताक अलौकिक रूप-गुणक चारूकात चकभाउर दैत छल। तं कविता लहटगर-चहटगर आ मनमोहक होइत छल। इएह कारण छलैक जे क्रौंचक चित्कार सं व्यथित भ जे आदिकबि लेखनी घेलनि, ओहो अन्त तक एकर निर्बाह नहि क सकलाह आ अलौकिक सत्ता, फुसियाही मर्यादाक पाछां भासि गेलाह। हुनक अपनहि सिरजल मर्यादा पुरुषोत्तम राम कतेको तारा आ मंदोदरी कें बिधवा बनओलनि आ तैयो संतोष नहि भेलनि त अपन अर्द्धांगिनी धरतीपुत्री सीता कें पूर मास मे बन पठा देलनि। कहबाक प्रयोजन नहि जे तत्कालीन कविता के लोकजीवन स मिसियोभरि सम्पर्क नहि छलैक। रहबे केना करितैक जखन कि कवि स्वयं सर्वसाधरण सं कोसोदूर राज्याश्रित वा देवाश्रित रहैत छलाह।

आजुक कवि राज्याश्रित वा देवाश्रित नहि, अपन बुत्ता पर आश्रित अइ। ओ खेत-खरिहान मे, खान-कारखाना मे आफिस-अदालत मे खटैए। ओ मात्र सर्वसाधारणक संग रहितेटा नहि अइ, अपितु अपनो सर्वसाधारण होइए आ तें सर्वसाधारण लोकक जीनगीक समस्त नीक बेजाय ओकरो संग घटैत छैक। इऐह आजुक कविताक कथ्य होइए। तें आजुक कविताक मे अतर-गुलाबक गन्ध नहि लोहा-कोयला आ घामक गन्ध पाओल जाइए, घुंघरू ओ झालिमिरदंगक संगीत नहि मशीनक

हड़हड़ी-घड़घड़ी रहैए। आजुक कविता अलंकारक बोझ बाहरी आडम्बर सं मुक्त अइ, ओकर स्वास्थ्य आ सबल देहे सौन्दर्यक आधार छइ।

आइ सम्पूर्ण मानव समाज दू भाग मे बंटल अइ—शोषक आ शोषित। मनुक्खक शोणित पीबाक अभ्यासी नरपिशाच शोषक वर्ग अपन अधिकार छोड़वा लेल प्रस्तुत नहि। ई वर्ग बहुरुपिया सन अपन रूप बदलि विभिन्न क्षेत्र मे शोषण क रहल ए। दोसर दिस शोषित वर्ग संगठित भ रहलए आ शोषण सं मुक्तिक निमित्त संघर्षरत अइ। शोषण मुक्त समाज गठनक कल्पना के साकार केनाइ ओकर लक्ष्य छैक। आजुक कविता एही शोषित वर्गक पक्षधर अइ, जे मात्र शोषित-निपीड़ितक कथा-व्यथा कें रूपायितें टा नहि करैछ, अपितु ओकरा मे मुक्ति चेतना आ संघर्ष चेतना जगबैछ। तें आजुक कविता विलासिताक उपादान नहि, संघर्षक साधन थिक। ई मदिरा जकां कामोत्तेजनाक नहि संजीवनी सुधा जकां संघर्ष चेतनाक जन्म दैछ। ई वारांगना जकां अंकशायिनी बनि वासनाक क्षणिक तृप्ति प्रदान नहि करैछ, अपितु जीवनसंगिनी बनि अपन लक्ष्यतक पहुँचबाक शक्ति प्रदान करैछ।

एहिठाम हम कहि देबय चाहैत छी जे प्रस्तुत संग्रहक कविता सभक चयन करैत काल मैथिली आन्दोलनक बात सदिखन हमरा मन मे छल। हम मानैत छी जे मैथिली आन्दोलन आ अफ्रिका वा फिलिस्ताइनक मुक्ति आन्दोलन मे कुनू पार्थक्य नहि छैक। हम मानैत छी जे मैथिली भाषीक लेल हिन्दी, अफ्रिकाक जनताक लेल अफ्रिकांश आ पाकिस्तानक सिन्धी भाषीक लेल— उर्दू एके सुरसा राक्षसीक विभिन्न रूप थिक। सम ठामक जनता अपन भाषा-संस्कृति, जातीय मुक्तिक लेल एक रंग आकुल-व्याकुल अइ, संघर्षरत अइ। आ तें कविता अफ्रिकाक हो वा फिलिस्ताइनक, पाकिस्तान वा मिथिलाक - सभक कथ्य आ स्वर एके छैक जेना एक दोसराक प्रतिध्वनि हो।

● रामलोचन ठाकुर

माओ त्से तुङ

दीर्घ अभियान

●

लाल फओज निर्भीक दीर्घ पथ यात्रा बहु बाधाक
पर्वत नदी भरल पथ दुर्गम तदपि न किछु चिन्ताक
पाँच शिखर पथ बक्र नदी फेनिल पुनि ढेप फराक
फानि जाइछ जनु ढेप मुं पर्वत बिनु शंकाक
चिनशा स्रोत प्रहार करय जनु सदिखन तप्त शिलाक
तातु नदी पर पूल बनाओल हिम-सिक्कड़ि लोहाक
हंसी-खुशी तुषार पथ शतयोजन नम्मा मिनसाक
क्रय गेल पार लाल सेना बिजयक आनन्द फराक

★

कुनलुन

•

बहुत दूर पिरथी सं नीलाकाश बीच बसि
तों कुनलुन बनैया, सभटा देखि चुकल छें
लोक जगत मे जतबा जे छल नीक
तीस लाख श्वेतांग सर्प तोहर उड़ैत अछि
सर्दहि जमल बसात बर्फ झड़ि झड़ि खसैत अछि
ग्रीष्म काल मे पघिलब हो प्रारम्भ
पाबि अधिक जल पोसय नदी - नद दम्भ
माछ काछु सन जीनगी लोकक बना दैत अछि
युग·युग सं चलि रहल तोहर ई खेल
के क सकल विचार थिक उपकार ने अत्याचार
तें कहैत छी आइ सुनै कुनलुन
आर जुनि उठा माथ बर्फ अम्बार
नहि त एइखन पकड़ब हम तरुआरि
तीन खण्ड क काटब—
पहिल खण्ड यूरोप पठाएब
दोसर खण्ड अमेरिका
तेसर रहते पूर्वदेश मे,
तखन विश्व मे शान्तिक हएत निवास
सभ केओ पाओत समाने सर्दी ताप

*

हजार कविक काव्य-संकलन पाठ

•

बर्फ आर फूल
बसात आर चान
कुहेस, पहाड़ आर नदी—
इएह सभ प्राकृतिक सुन्दरता ल कें
गीत गेनाइ नीक लगनि
पहिलुका कवि लोकनि कें
आइ कालि हम सभ
लोहा आ कोइला ल कें
कविता रचब
आर कवियो के
आक्रमण परिचालना
सिखहि पड़तनि

*

धनकुटनी

•

ढेकी मे धान कतेक कष्ट पबैछ !
किन्तु, कुटल भ गेने
उज्जर दप दप चाउर बनि बहार होइछ,
एहि पिरथी पर मनुक्खोक संग
ठीक एहिना होइत छैक
विपत्तिक कारखाना सं चमकैत
रत्न बहार होइछ

*

जीवन पथ

(क)

ऊंच स ऊंच पहाड़क चोटीपर चढ़ि चुकल छी
तखन
केना सोची जे
आर बेसी विपत्तिक सामना करय पड़त समतल मे ?
पहाड़पर बाघक मोकाविला केने छी
देह मे नछोड़ो ने लागल अइ
मनुक्खक मोकाविला केने छी समतल मे
आ ओ सभ हमरा जहल मे बन्न क क बैसल अइ,

(ख)

बिशिष्ट एगो भद्रलोक सं
भेंट करै लेल
चीन देशक यात्रा केने छलहुं,
निर्जन बाट मे हठात्
माथ पर अकाश टूटि खसल
आ एके धक्का मे
सम्मानित अतिथि जकां
सोझे जहल पठा देलक,

(ग)

विवेकक दिस सं वेकसूर
आ लोक हिसावे स्पष्ट वक्ता हम,
परंच हमरा चीनक दलाल कहल गेल, तें
देखिते छी जीवन पथ एतेक सोझ नहि,
बाधा विपत्ति, झर झमेला लगले रहैछ

*

बर्तोल्त ब्रेख्त

मजदूरक दृष्टि मे इतिहासक पोथी

के बनओने छल थिब्सि नगरक सात सात टा द्वार ?
इतिहासक पाथी मे लिखल प्रत्येक राजाक नाम !
किन्तु बड़का-बड़का चाक्र ठेलि-ठेलि हटओने छल जे सभ
ओ सभ कि राजा छल ?
ध्वंस भेल बेबिलोन
किन्तु प्रत्येक बेर ओकरा नव सं बनओलक जे सभ ओ के छल ?
सोनसन चमकैत लीमा नगरक निर्माण केने छल जे सभ,
नगरक कून महल मे छलैक तकरा सभक निवास ?
साम्राज्यिक रोम विजय तोरण स भरल,
किन्तु से सभ के बनओने छल ?
ककरा सभ कें विजित केने छलाह सम्राट लोकनि ?
गीत-गीत मे अमर भेल अइ बाइजेन्टियन,
किन्तु, ओकर प्रत्येक घर कि राजप्रासाद छलैक ?
जाइ राति सामूद्रिक जल-प्लावन मे प्लावित भेल
पुराण कथित अतलान्तिस नगरी सन्मुख ठाढ़ भेल
डूबैत लोक कें मालिकक मिजाज मे हाक देने छल
ओकरा सभक क्रीतदास कें

तरुण अलेक्जेन्द्र जय कैने छलाह भारत वर्ष
जय कैने छलाह कि ओ असगरे ?
सीजर मारि बैलओने छलाह गोल सभ कें
किन्तु हुनक सेना मे कि एकटा भनसियो नञि छल ?
स्पेनक नओबेड़ध्वंस भ समुद्रक गर्भ मे चलि गेल
कनैत-कनैत नोरक धार बहा देलनि स्पेनक राजा फिलीप,
किन्तु आर केओ कि नञि, कानल छल ?
सप्त वर्ष व्यापी युद्ध मे विजयी भेल छलाह महान फ्रेडरिक
आर के सभ विजयी भेल छल हुनका संग ?
इतिहासक पन्ना-पन्ना पर विजय कथा,
किन्तु, विजयोत्सवक खर्च जुटओने छल के सभ ?
प्रति दस वर्षक अन्तर एक गोट महापुरुषक आविर्भाव
किन्तु, ककरा सभक जेबीक शेष कैंचा सं
तैयार भेल छल ई महाआविर्माव पथ ?
मन पड़ै-ए एहि तरहक कतेको छोट-पैघ कथा,
एहि तरहक हजारो प्रश्न ?

*

माथ मारी अइ

●

सरकार हमेसा जनता कें कहैत रहैत छइ
कि शासन चलओनाइ कते कठिन अइ ?
मंत्री नञि होथि त
फसिल माटिक भितरे गरल रहत,
उपर नञिं आओत।
कोइलाक एको टुकड़ी बाहर नञि बहराएत
जं खनिज मंत्री बुधियार नञि होथि।
महिला गर्भवती नञि होएतीह 'पोप'क बिनु।
सुरक्षा मंत्री नञि रहथि
त कुनू लड़ाइ नञि हो। आर यदि सूर्य
प्रधान मंत्रीक आदेशक बिनु समय सं पहिने उगए
त ओ खुलेआम प्रश्नक सामना करए—
आर जं उगिए आएल त
भरिसक ओ जगह गलत हएत
जतए उगत।
पहिना मुश्किल छइ कारखाना चलओनाइ
कारखानक मालिक कहैत छथि।
'शेयर होल्डर'क बिनु भित्त खसि पड़त आ
मशीन मे बीमा लागि जाएत—ओ कहैत छथि।
आओर एते तक कि कुनू तरहें जं हर बनिओ जाए
तैयो असंभव छइ जे ओ खेत जोति सकत

ओइ सूक्ष्म अर्थवला शब्दक बिनु
जे बिज्ञापन-एजेन्सी किसानक लेल लिखं-ए । के
ओकरा लग ई समाचार पहुंचाओत जे कि हरो होइ छइ ?
आओर खेतक की हएत
जं जमींदार नञि होथि ? तय छइ कि
सरिसो बाओग क देल जाएत
जाइठाम पहिने आलू छल ।
जं शासन केनाइ आसान होइत
त हमर वर्तमान नेताए जकां राजनीतिक
दलो बिनु खगताक होइत ।
यदि मजदूर जनैत जे मशीन केना चलाओल जाइ छइ
आर किसान कहि सकैत कि जमीन
आर रोटीक बीच की सम्बन्ध छइ
त ककरो ने शेयर-होल्डरक खगता होइतै आ ने जमींदारक ।
ई खाली ऐही लेल छइ जे हम सभ बौक छी ।
आ हमरा सभ कें ओइ किछुक खगता अइ
जे चलाक अइ ।
अथवा
संभव छइ
सरकार एते कठिन एइ लेल छइ
जे लूट आ भूठ सेहो किछु सबक सीखि सकए ।

*

गुंटर ग्रास

तीन प्रश्न

एतय हम केना हंसू
जतय नीक होइत कि आतंक हमरा ठारि क
शीशा क लीत,
केना हंसू कलेबा करैत काल
हम, जतय कूड़ा, कूड़ाए बढ़ैत रहैत छैक
इल्जेबिलक केना बात करू
किएक त ओ सुन्नर अइ
आओर सओन्दर्यक बात ?
हम, जतय फोटो मे हाथ
बिनु भातफ रहैत छैक अन्त तक
केना लिखू
बबुर्ची पर
कि ओ केना ठूसि क भरैए मोट कएल गेल
हंस के ?
जकर पेट भरल छैक ओ भूखहड़ताल करै-ए
ओ सुन्नरसन कूड़ा ।
ई बात हमरा टूटैतक हंसबैए, खत्ते
हम 'लाज'क निमित्त एगो शब्द ताकि रहल छी ।

*

हिस्तो बोतेव

मातृभूमि

ओ मां हमर, प्रिय मातृभूमि,
किए कनैत छी हबोढेकार ?
ओ—बुझलहु, बुझलहु हम,
अहां कनैत छी मां हमर
किएक त अहां छी निपीड़ित दासो,
किएक त अहांक पवित्र आवाज, मां हमर
विशाल निर्जन मरूथल मे एकाकी निरर्थक अइ,
कानू। ओतय—सोफिया शहरक समीप—
हम देखल एक घृणित फंसरी झुलैत,
आर अहांक एक सन्तान—बुलगेरिया
ओहि मे लटकल छल सर्द—प्राणहीन।

★

कविक ई अन्तिम कविता बुलगेरियाक मुक्ति संघर्षक अग्रणी योद्धा 'भासिल लेभस्की' जिनका १८७३ मे सोफिया मे फांसी देल गेल छल—कें समर्पित अइ।

एक अज्ञातनाम शहीद कवि

राति सं

रातिः बन्दी कें ओकर गीत शेष करय दही
भोर हेबाक पहिने ओकर दुनू पांखि
छट - पट करतैक
आ वसात मे
हिलतैक ओकर निपरान देह
रातिः तों अपन गति कें मन्थर कर
मनक बात स्पष्ट क क
कहय दे हमरा
हम के, आ कि हमर व्यथा
से सभ भरिसक तों विसरि गेल छें
आह ! हमर जीनगीक पल सभ
केना क तोरा आंखिक सोझा
शेष भेल जाइछ
सोचनहुं कष्ट होइछ
तों जुनि सोचै, (जे हम डर सं कनै छी
हमरा आंखि सं आइ नोर बहै-ए
अपन देशक लेल
आर पितृहीन, अभिभावकहीन

भूखल धीया पुताक लेल
हमरा चल गेने
के देतैक ओकरा सभक मुंह मे अन्न ?
हमरा सं पहिनहि हमर दू गोट भाइ
फांसीक तख्ता पर जीवनबलि देने अइ
अपर केना एकाकिनी
पत्नी हमर
आंखि सं बहबैत अविरल नोर बांचल रहत ?
ओकरा लेल एगो कनौसियो
हम नहि रहय देखिऐक
केना रहितैक ?
हमर देश जे
अस्त्रक लेल चित्कार करैछ

*

'ब्रिटिस मैन्डेट' १९३६ साल मे एहि अज्ञातनाम अरबदेश प्रेमी कवि कें फांसी देने छल। जाइ राति एकाकी कारागार मे ओ ई गीत रचलनि ओ गओलनि तकर पराते हुनका फांसी देल गेलनि। एहि गीतक कुनू लिखित प्रति नहि छलैक, सर्वप्रथम एकर अंग्रेजी अनुवाद Poetry of Resistance in occupied Palestine मे प्रकाशित भेल छल

*

महमुद दारविस

परिचय पत्र

•

लिखि राख
हम अरब बासी
कार्ड नम्बर पचास हजार
संतानक संख्या आठ
अगिला गर्मी मे हमर नवम संतान जन्म लेत
तों सभ कि विरक्त भेलें ?

लिखि राख
हम अरब देशक लोक
पेशा : मजदूरी, भाइ सभक संग पाथर तोड़ैत छी
तों सभ निश्चय बुझैत छें
धीया-पुताक लेल
हमरा रोटियो तोड़य पड़ैछ
कपड़ा वा पोथीक दोकान मे
काज करय पड़त
हम कुनहु दिन तोरा सभक देहरि पर
भीक्षापात्र लेने नहि हएब ठाढ़
हम अरब बासी
तों सभ कि तामस केलें ?

हमर कुनू नाम नञि
हमरा चारूकातक सभ किछु
क्रोधाग्नि मे फड़कि रहल-ए
तैयो हम अधीर नञि भेल छी
हमर जड़ि अछि एतय
अलिव आ पवलर गाछक नीचा
गरीब खेतिहरक घर मे हमर जन्म
हरफार चलओनाइ हमर वंशगत काज
हमर वंशक कुनू महल नञि अछि
आङन-घर कहने
करचीक टाट सं घेरल एक गोट मड़ैया
मनुक्खक खगता ताइ सं कते मेटाइ छइ ?

लिखि राख
हम अरब देशक लोक
हमर केशक रंग धन-कारी
आंखि हमर
एही सं हमर चेहराक हुलिया
तों सभ बुझि सकैत छै
'केफिया' आर 'अकाल' सं
हमर माथक मुरेठा तैयार
हमर दुनू हाथ पाथर सन सक्त
क्षत-विक्षत
हमर प्रिय भोजन : अलिभक तेल
आर सुगन्धित साग

ठेकाना : एगो बिसरलसन निरीह गाम
ओतुक्का बाटघाटक कुनू नाम नञि

ओतुक्का लोक सभ
खेत मे आ पहाड़ पर काज करैछ
मनुक्खक बंचबाक लेल
ई कि पर्याप्त छइ ?

तों सभ हमर अंगुरक खेत छीनि लेने छें
जाइ खेत मे हम फसिल फड़बैत रही
सेहो खेत छीनि लेने छें
कठोर पाथरक अतिरिक्त हमर नेना सभक लेल
तों सभ किछु नञि रहय देलें
सुनबा मे अबैए
तोरा लोकनिक सरकार ने कि से पाथरो
ल लेत
तखन
पहिनहि तों सभ लिखि राख
हम ककरो घृणा नञि करैत छी
हम ककरो किछु हरण नञि कएल
किन्तु हमरा जं उपास रहबाक लेल
बाध्य कएल गेल
त हम अत्याचारी कं रिहाइ नञि देबैक
ओकर माउस नोचि क खा जेबैक
सावधान
हमर भूख आ तामस सं
तों सभ खेला जुनि कर

तामस

●

हमर हृदयक रक्त-पद्म सभ
जरि कें सियाह भ गेल
हमरा मुंह सं
अग्नि कण छिटकल .
भुक्खर दानबदल
कून बन, कून नर्क सं
तों सभ आबि हाजिर भेलें ?
दुखक आनुगत्य मानि लेबाक हम शपथ लेने छी
भूख आ निर्बासनक संग मिलओने छी हाथ
हमर हाथक नस सभ तामसे फुलि गेल अइ
हमर माथक नस सभ क्रुद्ध
हमर धमनीक रक्तस्रोत ओकर प्रवाह
माफ कर, गीत कविताक विलास हमरा लेल नञि
प्रबल शक्तिमान अरण्य मे
फूलो कें आदिम अरण्य बनि जाय पड़ैत छैक !
हमर अति प्राचीन गह्वरक बीच
हमर क्लान्त स्वर विश्राम करओ
इएह हमर यंत्रणा
बालुक उपर अथवा मेघक नीचा
एक गोट प्रचण्ड आघात
एखन एतबे पर्याप्त जे हम तामसे लाल भ गेल छी
किन्तु, विप्लव हएत आगामी कालि

★

निर्वासितक पत्र

●

तोरा लेल हम अपन प्रणाम पठाओल
संगहि शुभकामनाओ
आर की ?
कतय सं शुरू करी आ कतय बिलमी
किछु ने जनैत छी
समय सांपसन छनटैत पुनटैत चलल जाइछ
आ दुगन्त—ओकर कुनू किनारा नञि
एइ निर्बासन मे हमर सम्बल मात्र एक टुकड़ी टटाएल रोटी
व्याकुलता
आर हमर समस्त व्यर्थताक
स्तूपीकृत इतिहास
हम शुरू करी कतय सं
एतेदिन जे किछु बजलहुं
किम्बा अगों जे किछु बाजब
से सभ हमरा आपस
नञि ल जा सकैछ,
नञि क सकैछ बर्खा
किम्बा भुतिआएल ठेहिआएल कुनू चिड़ैक पांखि मे
शक्तिक संचार नञि क सकैछ
बेतार मारफद समाद पठा रहल छी
ओकरा कहियहो हम नीके ना छी
हम एगो बगड़ी सं कहै छिऐक

जं कुनू दिन ओकरा लग पहुंचि गेलें
हमर बात बिसरि जुनि जो
ओकरा कहियही, हम नीके ना छी
भरोसक गप्प
हमर आंखि एखनो ज्योतिहीन नहि भेल-ए
अकास मे एखनो चन्ना चमकै छइ
हमर पुरना पहिरन एखनो नष्ट नहि भेल-ए
अस्वीकार क क लाभ नहि
ठाम-ठिम फाटि गेल छल
हम चेफरी लगा लेने छी
एखन बेस पहिरल जा सकैछ

हमर वयस आब बीस क पार क गेल
मां ! तों देखने बुझि सकैत छें
हम आब समर्थ लोक जकां काज क सकैत छी
होटल मे अइंठ थारी धोइ छी
गंहिकी लेल चाह बनवैत छी
ओकरा सभक खुशीक लेल
बलजोरी बिहुंसि लैत छी

आने तरुण सन
कोनटा मे ओङठल
कुनू तरुणी-संग गप्प करै लेल
हम एखन ठाढ़ भेल सिगरेट पीबै छी
नारी बिनु जीनगी दुसह
हमर बन्धु एक टुकड़ी रोटो मङने छल
'प्रत्येक राति जें लोक उपासल
ओछाएन पर जाइए
तकरा जीवि क लाभे की ?'

हम नीके छी
हमरा एक टुकड़ी रोटीक सम्बल अइ
आर अइ किछु तीमन तरकारी
बेतार सं निर्वासित सभक समाचार सुनैछी
ओ सभ कहैछ : हम सभ नीके ना छी
केओ ने कहैछ : हम नीके नहि छी
बाबूजी केना छथि—जनबिहें
एखनो कि ओ पूजा-पाठ करिते छथि
एखनो कि ओ नेना-भुटका कें धरती आर,
अलिभ गाछ कें सिनेह करिते छथि
संगहि भाइसभ केना अइ
बाबूजीक इच्छा सं कि सभ अध्यापक बनि गेल ?

हमर कोढ़ फाटि रहल-ए किएक बुझलें ?
कुनू सांझ जं हम हठात् दुखित पड़ि जाइ
राति कि हमरा सहानुभूति देखाओत ?
उद्वास्तु भ क हम एतय आयल छलहुं
कहियो फेर अपन देश घुरि नहि सकलहुं
जाइ गाछ तर हम खसल रही
से गाछ कि मन राखत जे
से मृत वस्तु एगो मनुक्ख थिक
हमर लाश कें नढ़ेयाक आक्रमण सं
बचेबाक कि ओ चेष्टा करत ?

मां
पता ने ई चिट्ठी विपक लिखहहुं
के तोरा लग पहुंचाओत
जल-थल-नभक बाट आइ बन्न
आ तोंहू सभे-भ सकेध—मृत
अथवा, हमरे जकां कतौ बांचल हेबें
जकर कुनू पता-ठेकाना नञि

जकरा सभक कुनू देश नञि
जकरा सभक कुनू घर नञि
जकरा सभक कुनू मंडा नञि
जकरा सभक कुनू ठेकाना नञि
तकरा सभ कें जीबाक कि कुनू मोल छइ ?

★

एकटा लोकक बारे मे

●

ओ सभ ओकर मुंह बन्न क देलकै
मृत्युशिला मे बान्हि कहलकै :
तों हत्यारा छें
ओ सभ ओकर अन्न-वस्त्र आ मंडा छीनि लेलकै
मृत्यु कोठली मे ठेलि देलकै आ कहलकै :
तों चोर छें
सभठाम सं ओ विताड़ित भेल छल
ओ सभ ओकर दुलरुआ बेटीओ छीनि लेलकै आ कहलकै :
तों रिफ्यूजी छें

फुलल दू गोट आंखि
आ शोणिताएल दू गोट हाथ कें
तों कही :
रातिक बाद भोर हेतै
जहलक देबाल टूटि जेतै
कंड़ी कहि क आर किछु नञि रहतै
नीरो मरि गेल, किन्तु रोम नञि मरलै
आंखि सं अग्नि वर्षा क लड़ाइ केने अइ
सुखाएल गहुमक एकटा शोरा सं
समस्त खेत हरियर लहलहाइत गहुम सं भरि जेतै।

★

लुमुम्बा

अफ्रिकाक एकटा भोर

●

निग्रो ! तों हजार बर्ख अत्याचार सहने छें पशु जकां
आर मरूभूमिक बसात-बसात मे उड़ैछ तोहर भष्मावशेष
तोहर आत्मा कें बचा क राखक नामे
तोहर दुख-भोग के जिया क राखक हेतु
मुष्टाघातक बर्बर अधिकार
आर कशाघातक श्वेतांग-अधिकार कें जिया क राखक वास्ते
तोहर मरबाक अधिकार
आर तोहर कनबाक अधिकार कें चिरन्तन करबाक बास्ते
तोहर शत्रु बनओलक-ए असंख्य अनिन्द्य सुन्नर जादू मंदिर
तोरा छाती पर ओ सभ आंकि देने अइ
अन्तहीन उपास—अन्तहीन बन्धन
अरण्यक अन्तरीक्ष सं सांप जकां लक्ष्य करैछ तोरा
एक विभत्स निष्ठुर मृत्यु—
वनस्पतिक फाटल ओ शीर्षदेश सं
प्रसारित शाखा सन
गिड़हे-गिड़ह ध लेने छौ तोहर
देह कें तोहर आत्मा कें
तकर बाद तोरा छातीपर छोड़ि देने छौ
एक विशाल कुटिल विषधर
आर कन्हांपर खौलैत पानि (पात्र)
सस्त आ नकली मुक्ताक चमक सं लोभा क तोहर प्रेयसी कें
छीनि लेने छौ तोहर अपरिमेय ऐश्वर्य कें

अन्हार-गुज्ज राति मे
तोहर खोपरी सं बहराइछ टमटमक आबाज
आबइछ अबैछ धर्षिता नारीक चित्कार
तोहर विशाल कारी नदीक बक्ष पर
नोर आ शोणितक समुद्र बहा
छाड़ल जहाज जा रहल-ए ओही पापभूमि दिस—
ओ सभ जकरा कहैछ मातृभूमि
मानव जतय पंकिल
डॉलर जतय सम्राट
जतय तोहर सन्तान, तोहर प्रेयसी
दिन-दिन पिसाइछ
निर्मम आ भीषण शोषण-रथ-पहियातर
असह यन्त्रणा सं

ओ सभ तोरा कहने छौ
        आने सभ जकां तोहूं छें मनुक्ख
श्वेतांग देवता एकदिन सभ मनुक्ख कें मिलाओत
किन्तु, कानब तोहर बन्न नञि भेल कहियो
क्रन्दन गीत गबैत फिरै छें
अनात्मीयक दुआरिए-दुआरि
गृहहीन भिखारि जकां

जखन अन्तरक ज्वाला उठै छौ ढेउ बनि देह आ मन मे
नाचल छें भरि-भरि राति
गओने छें गीत अन्हरक गुंगुएनाइ सन
हजार बर्खक यातनाक गर्भ सं
फुटल-ए एक प्रचंड शक्ति
पौरुषक सुर

आग्नेय कथा कविता मे
जाज संगीतक घातवीय झंकार मे
ओही उन्मादिनी सूर धुनिक मुक्त धाराक वेगक प्रचंडता मे
कापि उठल महादेशक एइ प्रान्त सं ओइ प्रान्तधरि
अकचका क जागि उठल समस्त संसार
बिस्मित आतंकित कान पाति सुनने अइ
से भयंकर रक्तक छंद, से भयंकर छंद संगीतक
आतंके विवर्ण श्वेतांग दल कान पाति सुनने अइ
रातिक अन्हार मे जरैत मशालसन एक नवगीत

भोर भेलै बन्धु !
आंखि खोलि देख हमरा सभक मुंह दिस
चकमक करैछ एक नव शपथ
माथ उठा देख पुरान अफ्रिकाक छातीपर
आएल ए नव भोर
एते दिनक बाद आपस पाओत सर्वहारा निग्रो अपन
हजार बर्खक हेराएल देश
हेराएल माटि, हेराएल पानि
हेराएल विशाल नद-नदी

सूर्य उगल ए
ओकर विकीर्ण निर्मम अग्निकण मे
सुखा जाएत तोहर आंखिक नोर
सुखा जाएत तोहर मुंहपर पसरल थूक
कंड़ी तोड़ह बन्धु ! कंड़ी तोड़ह !
कंड़ी टुटबाक संगहि
चिर दिनक हेतु शेष हएत तोहर
दुसह दुखक दारून दुर्दिन

कारी माटिक छाती फारि माथ उठा ठाढ़ हएत
एक स्वाधीन निर्भीक कांगो
कारी माटिक अन्हार मे कारी बीजक भितर सं
कारी मुकुल-मंजरित
आलोकक आकाश मे
माथ उठा ठाढ़ हएत
कांगो
हमर कांगो

डेभिड डियोप

अफ्रिका

अफ्रिका !
हमर अफ्रिका !
अतीतक वीर योद्धा सभक गर्व गर्विता अफ्रिका,
दूर नदी किनार पर बैसलि मैआ जकरे गीत गबैछ
सएह अफ्रिका–

सरिपहुं, हम कहियो ने चीन्हल
किन्तु, हमर नस-नस मे बहइछ तोरे शोणित
तोरे सुन्नर कारी शोणित
जेना प्राण-रस जल धरती हित

तोहर
घामक शोणित
श्रम केर घाम
दासताक श्रम
वंशधरक दासत्व
अफ्रिका तों हमरा कह
फुकल देह कि इएह थिकें तों ?
अपमानक भारी बोझें कि टूटि गेल छौ डांड़
भुजरी भुजरी पीठ भेल छौ शोणिते-शोणितान
दुपहरिया के प्रखर रौद आ चाबुक केर आघातें
जे 'हं' छोड़ि ने कहियो 'नञि' बाजैछ

किन्तु वेश गंभीर स्वरें जनु केओ हो दैत जबाव—
ढीठ बालक ! सामने मे देखै छें ओ गाछ
पूर्ण सतेज- सबल
उज्जर-दपदप निष्प्राण फूल केर बीच एकाकी अइ ठाढ़
इएह थिक अफ्रिका, तोहर अफ्रिका—सहिष्णु
किन्तु, अनिवार्य रूप सं जे बेर-बेर बढ़ैछ
नहु-नहु हो संजीवित
स्वाधीनताक स्वाद तिक्त

जौस क्रे मिरिन्हा

भविष्यक नागरिक सभक लल

कुनू एक ठाम सं हम आयल छलहुं ...
एहन एक जाति सं जकर एखनहुं कुनू अस्तित्व नञि

हम आयल छी आ ... एखनहुं बांचल छी

खाली हमरहिटा जे जन्म भेल छल से बात नञि
तोहर वा आर विशेष ककरो ... सेहो नञि
जन्म लेने छलहुं हमरा लोकनि सभ भाइ

जतबा सिनेह हमरा हृदय मे अइ, से
हम बांटि सकैत छी
ताइ सं बेसी किछु नञि

हमर हृदय आ ओकर आर्तनाद
सभ हमर एसगरेक नञि....
हम एहन एगो देश सं आयल छी जकर एखनो जन्म नञि भेलैए

आह हमरा हृदय मे बहुत सिनेह अइ
से सभ हम बिलहि द सकैत छी
हम !
हम ओही विशेष जातिक एगो लोक
जाइ जातिक एखनहुं जन्म नञि भेलैए

★

लैंग्स्टन हिउज

निग्रो

•

हम एगो निग्रो
अन्हरिया राति सन हमर देहक रंग कारी
अफ्रिकाक अन्तस्थल सन कृष्णकाय हम

हम क्रीतदास भ जन्मल छी
सिजर हमरा आदेश देने छलाह
हुनकर दरबज्जा साफ रखबाक
वाशिंगटन मे जूता-पालिस केने छी हम

हम रोज पर खटने छी :
हमरे हाथें पिरामिड तैयार भेल अइ
वलवार्थ प्रासादक रंग-मशाला,
हमही बनओने छी

हम गीत गबैत आयल छी
अफ्रिका सं जर्जियाधरि भरिबाट
अपन व्यथा-कथा सं पाटि देने छी
हमरा बछन्नड़ देल गेल अइ
हमरा उपर सभ अत्याचार केने अइ :
कांगो मे बेलजियम सभ हमर हाथ काटि देने अइ
टेकसास मे बिनु बिचारे देने अइ दंड

हम एगो निग्रो :
रातिक अन्हारक अनुरुपे हमर देह गढ़ल
अफ्रिकाक बिजन वन सन कारी
हमर देह

★

हम एगो पिरथीक सपना देखने छी

•

सपना मे हम पिरथी के देखि रहल छी :
जतय केओ ककरो घृणा नञि करतै
जतय प्रेम पिरथी कें करओतै मुक्तिस्नान
आ शान्तिमय हेतैक लोकक बाट

हम एहन एगो पिरथीक सपना देखने छी—
जतय मनुक्ख स्वाधीनताक मधुर स्वाद पाओत
जतय लोभ हिरदैक रस नञि चूसतैक
अथवा मोह दिन-दिन कें
अन्हार नञि क देतै

हम सएह पिरथीक सपना देखने छी—
जतय गोर वा कारी
जे कुनू जातिक लोक किएक ने हो
पिरथीक सभ सम्पत्ति सभ मिलि बांटि लेत
जतय सभ स्वाधीन
जतय पशु प्रवृत्ति लाजें माथा झुकाओत
आ मोतीसन आनन्द
सभक अभाव दूर करत
से पिरथी हमरा सभक—
हम तकरहि सपना देखैत छी

★

पाब्लो नेरूदा

आर किछु नञि

●

आर किछु नञि
सत्यक संग हमर प्रतीक्षा
एहि पिरथीक हेतु हम संचित करब आलोक
हम जे चाहै छी
से भेल रोटी
संघर्ष कुनहु दिन नञि करत अनुभव हमर अभावक
अथच एतय जे किछु सं सिनेह अइ सभ पओने छी
जे गमओने छी से भेल निर्जनता
एखन हम आर एहि पाथरक छांह मे विश्राम नञि करै छी
समुद्र काज क रहल-ए
काज क रहल-ए निःशब्दे —हमर शक्तिये

★

लू सुन

आत्म प्रतिकृति मे लिखित

●

पवित्र मंदिर कखनहुं नञि
धुरा सकैछ देवता केर दूभि
बर्खा आ बिहाड़ि जेना जांत मे
पीसि देत एइ देश कें
शरदक मस्त तारागण हमरा
खाली उपेक्षा करैछ
हमर मनक बात जइखन
बजैए कंठ वीणाक तार सं
सुआन - युआन - वेदी मे
प्राण देब हम करैत छी प्रण

★

एकटा कविता

●

कांट कुस सं भरल जाइत अछि ई समस्त ग्रामांचल
युद्धक कारी सघन मेघ जाइत अछि पसरल
मुष्ठिमेय किछु लोक हंसि रहल एहि मधुमासे
खून करल जाइछ बांको सभ वाक् प्रतिमा कें
स्वेच्छाचारी सभक हाथ मे सौंपल जाइछ राज्यकभार
गजेरी भंगेरी बिवश बुद्धि ईश्वर
हृदय मध्य टन-टन ताकय विद्रोह
लड़ाकू जुलूस, जुलूस बीच शान्ति
झंझा चलए, जेना क्रोधित अजगरक होए फुफकार
फुल-गाछ सभ दलित-मथित····ई कुम्भीपाक

★

एगो शिल्पीक निमित्त

●

नानकिङ पर बमरि रहल-ए
दुर्दिन केर बिहाड़ि
झंपने जाइछ बन प्रान्तर कें
कारी घन अन्हार
नीलिमा जनु कुहेसक
गर्भस्थ हो भ गेल
फूल
आर
फूल
कते फूल
ने झड़ि गेल !
हमर सभक प्रिय शिल्पी हे
अंकित करह तों
नूतन शिल्पक एक अभिनव छवि
नव वसन्त मे
दूर पहाड़क
कोरा मे
रक्त वर्ण
जनु उगैत
नव रबि

*

शेखअयाज

मातृभूमि

●

मनुक्खक लेल
सभ सं पवित्र
माइक दूध
आर ओकर लोरी थिक
आओर ई दूध
जाइ देशक माटि-पानि सं बनल अइ
आओर ओ भाषा
जाइ मे ओ लोरी गाओल जाइए
ओतबे पवित्र थिक
आ यदि तों
एहि देशक (माटिक) हेतु
गोली नञि खा सकैत छह
त तोहर मांक पएर
तोरा लेल
सदाक हेतु स्वर्गक दुआरि
बन्न क देतह
आ तों
प्रलय धरि
हृदय नर्क मे
भेड़कैत रहबह

*

कयामत के आगि

●

इदक दिन छइ
हमरा कब्र सं
कयामत के आगि उठि रहल-ए
किएक त
हमर पोता
हमरा कब्र पर
फूल राखि
उर्दू मे दुआ माङि रहल ए

*

भयावह राति

●

केहन भयावह राति छइ !
लुमुम्बाक मृत्युसन
कारी छल आ कठोरताक राति !
हमरा अचरज लगैए
कि हमर हृदय
सम्पूर्ण धरतीक हृदयक संग धड़कि रहल-ए
आ जखन
हेमिंगवे आत्महत्या केने छलाह
तखन हमर आँखि सं
दहो-बहो नोर बहल छल
जेना हमर सहोदर कें
गोली लागल होइ
मानव जाति मे दूरी आब नञि रहल
तैयो
हमर एइ छोट-छीन देशक व्यथा
ककरा ज्ञात छइ ?
कि एकर व्यथा
धरतीक व्यथा नञि थिक ?
कि हमर ओहने हृदय नञि
जेहन आन कुनू मनुक्खक ?
आर ई कारी नाग सन अन्हार राति
जखन हमरा डसि रहल-ए
तखन केओ एहन नञि
जे हमर बिख झाड़य
आ एहि साँप सं
मुक्ति दिआबय !

*

एच. सयेह

जुलूस

नञि प्रिय / आब समय नञि रहल
हमर कान के नञि रहलैए अहांक मधुर प्रेमालापक अपेक्षा
अहूं / कोनो प्रणय-गीतक आशा जुनि करू हमरा स
नञि / आब समय नञि रहल
जुलूस आगू बढ़ि गेल

अहांक-हमर प्रेमक ओ दिन / आह !
एकटा सुन्नर कल्पित कथा सन
मुदा एखन
रोटी डुमरीक फूल भ गेलए
नञि प्रिय / स्नेह आ प्रणयक समय नञि रहल आब

जन्म दिनपर हमर शुभकामना
यौबनोन्माद स परिपूर्ण / अहां
बीसटा प्रज्वलित मोमबत्तीक इजोत मे चमकत
अहांक मुखमण्डल आनन्दातिरेक स विभोर होइत रहत
आ / ओहो राति
बीसटा पतझड़क मारलि अहीं वयसक युवती सभ/सुखले सुतत
नाङट/सर्द स्पन्दनहीन धरतीपर
अहां नाचब/समुद्रक हिलकोर जकां
अहांक सुन्नर-सुकोमल आङुर/वीणाक तार जकां कपैत रहत

आ / मोहक मादकता पसरि जेतैक वातावरण मे
मुदा / यौवनोल्लासक उत्कर्षक एही बयस मे
हजारो युवती/कठघरासन कारखाना मे
शोणिताएल हाथें/मशीन चलबैत रहत
आ जत्ते अहां भिखारि के दैत हएब
ओकर बोनि हेतैक

अहां / जाइ चित्ताकर्षक बहुरंगी कालीन पर नाचब
मनुक्खक रक्त सं रंगल अइ
ओकर प्रत्येक फानी मे / गांथल छइ
पाखण्ड / धोखा / शोषण
अहांक टेकनीकलर गलीचा
हजारक हजार निरीह अभिलाषाक श्मशान अइ

हजारो युवा चिनगी नितुआन भ गेल
हजारो हाथ / छोट-छोट आ सुन्नर हाथ
नष्ट भ गेल
हजारो सतर्क आंखि भ गेल ज्योतिहीन
नञि प्रिय / आब समय नञि रहल

गीत आ चुम्बन नञि / आब
सभ किछु रक्त आ आगिक रंग धेने जा रहलए
समय आयल / मुक्तिक लेल / बिहाड़ि आ बाढ़िक लेल
थम्हू / जुनि पसारू मोहक मुस्कीक जाल
प्रियदर्शिनी छवि सं हमर बाट जुनि छेकू
स्नेह / शराब आ संगीत
सुख सं परिपूरित हृदय स्पन्दन के
हमर बाधा नञि बनाउ
थम्हू / मोहक मुस्कीक जाल जुनि पसारू

शाहंशाहक स्वर्गद्वीप
अन्हारगुज्ज कालकोठरी / नर्कक सहोदर / मे
निष्कासित एकाकी हमर समानधर्मा
यातनाग्रस्त भ रहल हएत
नञि प्रिय / प्रेमालाप, प्रणय-संगीतक ई समय नञि
अहां प्रतीक्षा करू
एखन हमरा जुलूस मे साम्फी हेबाक अछि

ओहिदिन / जहिया
रातुक कारी पर्दा के चीड़ैत
प्रभात / पसारत अपन रक्ताभ किरिनक बांहि
सभ खिड़की पर / चकमक करत
हमर कामरेड सभक मुखमण्डल / निश्छल मुश्की सं
हमहूं आयब आपस
अहांक सुन्नर-सुरभित हृदय मे
चुम्बन / कविता / आ संगीतक संग

अनुवाद—कुणाल

*